JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मोहनदास नैमिशराय के नाटक ''हैलोकामरेड'' का आलोचनात्मक अध्ययन

चतुरेश अहिरवार (शोद्यार्थी)

डॉ0 जी0पी0 अहिरवार

एसोसिएट प्रोफेसर (शोध निदेशक)

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह (म0प्र0)

सारांश :– यहाँ दलित शब्द का मूल उद्देश्य नये मानवीय एवं समतामूलक समाज का निर्माण करना है । दलित साहित्य के केन्द्र में भारतीय समाज का सबसे निचला तबका मेहनतकश, सर्वहारा एवं असंख्य मानव जाति है । जिसे सदियों–सदियों से मनुवादी वर्ण व्यवस्था में धर्मशास्त्र, सामाजिक परम्परा आदि की आड़ में दलितों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से गुलाम बना रखा है ।

की–वर्ड :– साहित्य, संस्कृति, समतामूलक, भारतीय समाज, दलित वर्ग, धार्मिक, सामाजिक आदि ।

प्रस्तावना :–

हिन्दी के नाट्य साहित्य को संस्कृति की समृद्ध नाटक परम्परा विरासत में मिली है । भरत मुनि का नाटय शास्त्र इस बात का प्रमाण है कि भारत में रंगमंच व रूपक का विकास ईसा के सेकडों वर्ष पहले हो चुका था नाटक की व्यत्पत्ति के संदर्भ में मुख्य रूप से दो प्रकार के मत हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि नाटक की व्यत्पत्ति में यूनान की देन महत्व रखती है । किन्तु यह वास्तव में भ्रम है । सही व दूसरा मत है कि नाटक का उदभव भारतीय परिवेश की प्रमुख देन है। ईसा से लगभग 400 से 500 वर्ष पूर्व की अनेक रचनाओं जैसे बाल्मीकिकृत रामायण और बौद्ध ग्रंथों में नाटों के नामो रंगशाला और नटकियों के आलेख मिलते हैं ।

''परवर्ती युग में यह नाट्य परम्परा लगभग लघुप्रायः हो गई थी''[1]

हिन्दी प्रवेश में मध्ययुग नाटको के अभाव का युग रहा हिन्दी नाटक में मैथिला नाटक लोक मंगल के कारण प्रसिद्ध रहा 17 वीं सदी में भी कुछ पदबंद्य संवाद प्रधान नाटकों की परम्परा का श्री गणेश हुआ, इसमें ''हनुमाननाटक'' प्राणचन्द्र चौहानकृत आदि नाटक लिखे ।

19 वीं सदी आते–आते विभिन्न साहित्यकारों ने अनेक नाटकों की रचना की आदि अनेक पदबंद्य नाटकों की रचना, आधुनिक युग के आगमन तक हो चुकी थी। एवं आधुनिक युग में साहित्यकार अपने नाटकों को सही दिशा में ले जा रहे थे, हिन्दी साहित्य ने नाटय परम्परा में सबसे पहले भारतेन्द्र युग का प्रवर्तन रहा और फिर द्विवेदी युग और प्रसाद युग का नाटय परम्परा में नाटक को अनेक साहित्यकारों ने नाटक विद्या को एवं प्रसादयोत्तर युग में नाटक परम्परा को सृजय किया गया ।

भारतीय हिन्दी साहित्य ने 20 वीं सदी से पहले नाटकों में दलित नाटक लिखे जाने लगे थे । नाटक ही एक ऐसी विद्या है । जो जनमानस पर सीधे चोट करने के साथ–साथ उसे प्रमाणित भी करती है और दिशा भी देती है । नाटक साहित्य की शक्ति और सामर्थ्य की अपने लेख आलेख में समाहित करने वाली वह विशिष्ट साहित्य विद्या है । जिनकी अपार संभावनाओं का प्रमाण केवल दृश्य रूप में निहित रहता है ।

''मूल आलेख में विद्यमान नाटय व्यंजना की अनन्त संभावनायें मंच पर जीवन धारण करती है ।''[2]

भारतीय साहित्य में दलित समाज और नाटय परम्परा का अत्यन्त घनिष्ट संबंध रहा है। क्योंकि नाटक में काम करने वाले लगभग पात्र दलित समाज से ही रहते थे। दलित समाज व भारतीय नाटक परम्परा के अन्तसंबंध को प्रकट करते हुये ।

''एन0 सिंह के अनुसार :– भारत में नाटय परम्परा बहुत पुरानी है । दलित समाज के लिये यह प्राचीन काल में प्रतिबाधित थ । वेदों को पढ़ने व सुनने पर कठोर दण्ड की व्यवस्था थी ।''[3]

19 वीं सदी के शुरू में कुछ संवादों एवं गीतों के माध्यम से समाज में आर्य सामाजियों ने छुआछूत के खिलाफ प्रचार किया लेकिन इन नाटकों में वर्ण व्यवस्था को समाज की आवश्यकता के रूप में दर्शाया गया । हमसे बाद भी नाटककारों द्वारा दलित समस्याओं को आधार बनाकर दलित नाटक लिखने की परम्परा की सूत्रपात्र हुआ । लेकिन ये नाटक प्रकाशित नहीं हो सके ।

इस कड़ी में सबसे पहले 20 वीं सदी में ''आदि हिन्दू आन्दोलन'' के प्रणेता स्वाती अछूतानंद हरिहर जी के चार नाटक दृष्टिगोचर होते हैं ।

इसके बाद हिन्दी में तेजी से नाटक व एकांकी लिखे गये दलित नाटककारों में ऐतिहासिक व रामायण महाभारत तथा पैराणिक कथाओं के अप्रेक्षित पात्रों को आधार बनाकर नाटकों की रचना की इसी श्रेणी में हिन्दी दलित नाटकों में ''एन0आर0 सागर के अंतिम अवरोध नाटकों की सबसे पहले चर्चा की जाती है । जिसमें दलित व आदिवासी चरित्र बभ्रुवाहन की न्याप्रिया युद्धविरोधी व कमजोर की सहायता करने वाला महाभारत के पात्रों पर आधारित यह नाटक दिखाया गया है ।''[4] यह

नाटक हिन्दी दलित साहित्य की उपाधि माना जाता है एवं दलित साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय ने भी समाज के लिए नाटकों की रचना की है ।

किसी भी अनुभूति प्रवण साहित्यकार के कृतित्व का समग्र तथा समुचित अध्ययन करने के पूर्व उसके जीवन व्रत तथा व्यक्तित्व को सूक्ष्म रूप से समझ लेना आवश्यक होता है । रचनाकार का व्यक्तित्व उनके कृतित्व में अभियुक्त होता है और व्यक्तित्व निर्माण में जीवनगत परिस्थितियों तथा अनुभव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

''मोहनदास नैमिशराय जी ने साहित्य में दलित जीवन की गहरी छानबीन की गई है । उनकी रचनाओं में दलित समाज को जद्दोजहद और अस्मिता की पहचान की उत्कृष्ट इच्छाओं को अभिव्यक्ति मिलती है । वे बहुआयमी व्यक्तित्व के धनी है ।''[5]

उनके व्यक्तित्व का उनके साहित्य में गहरा प्रभाव पड़ा है । भारतीय साहित्य में दलित चेतना के वह प्रतिमूल साहित्यकार माने जाते हैं । उन्होंने दलित साहित्य में विभिन्न रचनाओं एवं निबंध उपन्यासों को लिखा है।

उनके साहित्य में दलित नाटको को भी देखा जा सकता है । जिसके माध्यम से उन्होंने दलित समाज पर हो रहे अत्याचारों को उजागर किया है ।

मोहनदास नैमिशराय का हैलोकामरेड नाटक

नाटक के पात्र

हरिया, किसना, अजय, विमला, हीरालाल, अरविन्द, पलटू, सुधीर, दीपक, शंकर शर्मा, फूलबती, रमा, पुलिस इंस्पेक्टर, सहयोगी कलाकार लेखक की भूमिका–रवि आदि

मोहनदास नैमिशराय के (हैलोकामरेड) में दलित से संबंधित आर्थिक व राजनैतिक समस्यों को उठाया है । नाटक की नायिका एक दलित है जो बामपंथी पार्टी की कार्यकर्ता है । पार्टी में उसकी पदोन्नति होने पर संवर्ण कैडर कैसे उसमें दूर व्यवहार कर उसके इज्जत से खिडवाड़ करता है । इसका सटीक चित्रण हम नाटक में किया गया है । नाटक का अन्य पात्र रवि पढ़ा–लिखा दलित युवक है । जिसकी पत्नि के साथ राजनीतिज्ञों द्वारा योन शोषण किया गया और वह पागल सा हो जाता है । विमला के साथ भी यही होता है ।

दलित उत्पीड़न की व्यथा को मोहनदास नैमिशराय ने ''हैलोकामरेड'' नाटक को प्रस्तुत किया था ।

शहर के बीच दलितों की एक बस्ती थी दोपहर का समय था एक दो व्यक्ति आ जा रहे थे, एक व्यक्ति गले में ढोल लटकाकर बजाता है। साथ ही साथ वह बीच–बीच में ऊँचे स्वर में कुछ

कहता भी है । पास ही दो व्यक्तियों का वार्तालाप हो रही है एवं दोनों व्यक्तियों की उम्र लगभग 55 वर्ष है ।

वहीं पर एक 20 वर्षीय नैजवान अजीब सी हरकते करता है और तभी मुनादी पीटने वाले की आवाज सुनाई पड़ती है । जिससे दोनों व्यक्ति उस आवाज को सुनते हैं ।

सुनो–सुनो बस्ती वाले सुनो, कल शाम ठीक सात बजे मेंहदी चौक में गरीब व मजलूमों के नेता शंकर शर्मा गरीब भाइयों को उपदेश देंगे और गरीबों को सम्बोधन करेंगे । और बीच–बीच में ढप–ढप की आवाज सुनाई पड़ती है ।

और मुनादी वाला कहता है। आप सभी से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में आकार क्रांतिकारी नेता का भाषण सुने (पुनः एवं फिर ढप–ढप की आवाज आयी।

किसना – अरे ये कौन ढोल बजा रहा है ।

हरिया – वही मंगलू है ।

किसना – पर क्या कहते हैं ।

हरिया – कहवे हैं । कल गरीबों के आंसू पोछने कोई नेता आवेंगे ।

किसना – फिर तो भाईयां हरिया कल खूब मजमा लगेगा ।

हरिया – हां मजमा भला क्यों नहीं लगेगा, भाड़ है ससुरे । दोनों हंसते है । तभी वही नौजवान खूब जोरों से हंसता है और नेता जी इसको सम्बोधित करते हुये नौजवान कहता है।

हां–हां नेता जी आएगे, और गरीबों के आसूं पोछेंगे, सुनी भाइयों तुम भी आना अपनी आंखों में आंसू लेकर, और कोई व्यक्ति अजीब सी हरकते करने लगता है।

उसकी आवाज सुन बातें करते हुये दोनों व्यक्ति चोंक उठते हैं और कहते थे यह कौन आ गया ।

हरिया तू जाने है । किसना कौन है । किसना न भाई मैं ना जानू ।

हरिया, यह रवि है । रवि वह जो पिछली गली में रहता है । तभी नौजवान उसकी तरफ देखता है और घूरता है ।

इस प्रकार से इस नाटक में दलित चेतना का प्रभाव भी ज्यादातर दिखाई देता है । यह नाटक बड़ा और मर्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है ।

''हैलोकामरेड'' की यह क्रांति भी आजादी के बाद के समय व वातावरण का ब्यौरा देती है । देश स्वतंत्र होने के बाद कई राजनैतिक पार्टियों का उदय हुआ । बड़े–बड़े वादे चुनावों में किये गये, परन्तु चुनाव के बाद जनता का कोई, काम ये राजनेता नहीं करते, जब अपना–अपना पद व प्रतिष्ठा पाने के लिये पार्टियों में प्रवेश करते हैं । पार्टियाँ छोड़ते हैं । फिर पकड़ते हैं । सभी दल बदलू हैं ।

केवल व्यक्तिगत हित के बारे में सोचते हैं। दलित गरीब जनता से केवल बाहरी दिखावा करते हैं । स्वार्थ सर्वोपरि है । मार्क्सवाद वर्ग विशेष की बात करता है । किन्तु वह भी जातिगत लाभ या आरक्षण का विरोधी है ।

भारतीय समाजवाद एवं मार्क्सवाद की बात करने वाले लोग अपनी बात सीधे–सीधे न कहकर ब्राम्हाणवाद के छद्म रास्ते से इस चेतना के अवरूद्ध करने का काम करते हैं ।

''हैलोकामरेड'' ऐसी मानसिकता का चित्रण एवं पर्दापाश करता है ।

इस प्रकार से विषय वस्तु स्पष्ट हो जाती है कि नाटक के मुख्य विषय राजनीति पार्टियों का खोखला आदर्श पाठ है ।

''डॉ0 जुगल किशोर जी ने मोहनदास नैमिशराय के इस नाटक के बारे में मौलिक विचार व्यक्त किये हैं ।

''मोहनदास नैमिशराय जी के समाज को दिये गये उनके अमूल्य सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यक योगदान का सम्ममान करते हुये हमारे सामाजिक व नैतिक दायित्व के निर्वाह का एक विनीत प्रयास किया है ।''[1]

मोहनदास नैमिशराय अपनी रचनाओं में हैलोकामरेड के बारे में दोनों प्रवृत्तियों को उखाड़ा है ।

हैलोकामरेड नाटक में उन्होंने वामपंथी उदारता का जामा पहनकर अपनी खास बात सीधे न कहकर ब्राम्हण वाद के छद्म रास्ते से दलित चेतना को बंद करने का जाने अनजाने या छिपे रूस्तम प्रयास करने वाले लोगों की मानसिकता को उजागर किया है ।

भारत की ऐसी ही सामाजिक व राजनैतिक परिस्थितियों ने उन्हें यह नाटक लिखने के लिये उद्वेलित किया था उन्होंने यह तीव्र महसूस किया की वामपंथी पार्टियों में भी कहीं न कहीं संवर्ण मानसिकता है । जो जाति के सवालों को तरजीह न देकर वर्ग की बात करती है । जबकि व्यवहार में उनके कैडर जाति–ग्रंथी से ग्रसित है । पार्टी के कैडर स्थानीय समस्याओं को उठाने के लिए स्वतंत्र रही है ।

इसके लिए इन्हें जिला सचिव से इजाजत लेनी पड़ती है । इस नाटक में मोहनदास नैमिशराय ने विभिन्न पात्रों में परस्पर संवाद और बहस द्वारा सारी स्थिति घटनाओं और प्रवृतियाँ को बखूबी उजागर किया है ।

हैलोकामरेड नाटक में सभी पत्रों को उनके व्यक्तित्व व क्रांतित्व से एक स्पष्टता से व उनको क्रमिता से किया गया है ।

इस नाटक में विमला पात्र किस तरह से एक दलित वर्ग की महिला नेता बनने के चक्कर में पड़कर व वह मर जाती है और जिसमें दर्शकों को संबोधन देना । तुमने और कहता है। राजनीति एक अजगर है । एक दिन आयेगा और तुमको भी निगल जायेगा। इस नाटक से रवि कहता है कि मेरी बीबी का बलात्कार हुआ है और तुमहरी भी बीबी का बलात्कार होगा सबके ऊपर जुल्म होगा । इस तरह से हम सबकी बहन बेटी एक दिन हबस का शिकार बनेगी। और इसके साथ हम सब अनाथ हो जायेंगे । इस नाटक में मोहनदास नैमिशरायजी ने यह बताने की कोशिश की है कि पार्टी से जुड़ने के बाद किस तरह से संवर्ण लोग राजनीति के जरिये दलितों पर अत्याचार कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथी सूची

(1) डॉ0 नगेन्द्र, आधुनिक हिन्दी नाटक – राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1996 पृष्ठ 2

(2) डॉ0 राधेश्याम बाजपेयी – हिन्दी नाटक कला तथा रेडियो नाटक–अटलांट्रिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर नई दिल्ली पृष्ठ 6

(3) डॉ0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – ''बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य'' कमला प्रकाशन पृष्ठ 60

(4) माता प्रसाद – ''दलित साहित्य में प्रमुख विधि''– आकाश पब्लिसर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर 2004 पृष्ठ 26

(5) माता प्रसाद – ''दलित साहित्य में प्रमुख विधि'' आकाश पब्लिसर्स एण्ड डिस्टीब्यूटर 2004 पृष्ठ 36

(6) ओम प्रकाश बाल्मीकि – ''दलित हस्ताक्षेप'' दिल्ली असर शिल्पी 2008 पृष्ठ 109

(7) डॉ0 सुनीता ''मोहनदास नैमिशराय के विविध अयाम'' सिद्धार्थ बुक्स रामनगर एक्सरेशन मडोली रोड शहदरा दिल्ली 2012 पृष्ठ 60

(8) मोहनदाउस नैमिशराय हैलोकामरेड–नटराज प्रकाशन साउथ गामड़ी एक्सरेशन दिल्ली 2001 पृष्ठ 1–79

(9) लक्ष्मी नारायण शंखवार ''चलो भीम की राह'' अखिल भारतीय अत्याचार विरोध संघ इलाहाबाद 1995

(10) बिहारी लाल हरित ''वीरांगना झलकारी बाई'' कीर्ति प्रकाशन शहदरा दिल्ली 1995 पृष्ठ 32

(11) सूरज पाल चौहान ''प्रयास'' जागृति प्रकाशन एफ 108 सेक्टर 20 नोएडा 1994